Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 23/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप का मॉडल

Models of Mental Health Intervention

मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप का तात्पर्य उन प्रतिमानों से हैं जिनमें मानसिक रोग मे ग्रस्त व्यक्ति की समस्याओं को समने पर्व उसक उपचार को व्यवस्था में है जिसमें मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्ति का उपचार कर उनहें मानसिक रूप से स्वस्थ पूर्व मुक्त करने का प्रयास किया जाता है। विश्लेषणात्मक उद्देश्य को ध्यान में रखकर नैदानिक मनोवैज्ञानिकों मनोरोग विनि (Psychiasiss) एवं मनश्चिकित्सीय सामाजिक कार्यकर्त्ताओं (psychiatric Social workers) द्वारा मानसिक स्वास्थ्य उन्मुखताओं का वर्णन किया गया है। कोरचिन (Korchin, 1986.2003) ने मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप के प्रतिभाग या मांडल के निम्न लिखित तीन प्रकारों में वाँटा है-

(1) नैदानिक प्रतिमान (Clinical models),
(2) सामुदायिक क्रिया प्रतिमान
(community models) तथा
(3) सामाजिक क्रिया प्रतिमान
(social action models)

(**1) नैदानिक प्रतिमान (Clinical models):**

नैदानिक प्रतिमान वह प्रतिमान है जिसमें व्यक्ति विशेष (रोगग्रस्त व्यक्ति) को ध्यान में रखकर उपचार की व्यवस्था ही जाती है। यहाँ चिकित्सा सेवार्थी केन्द्रित (client centred) होता है। अर्थात मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्ति का प्रत्यक्ष रूप उपचार करके उसको रोग मुक्त करते हुए मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने का प्रयास किया जाता है। इसके अन्तगत दो प्रतिमाओं की व्याख्या की जाती हैं-

(1) custodial model- इस प्रतिमान रही सीन मुख्य बातें हैं- (क) पहाँ उपबार का केन्द्र स्वयं रोपी होता है (ख) रोगी का उपचार किसी मनचिकित्सीय अस्पताल (Psychiatric hospital) में रहा बार की जाती है। यहाँ रोगी की देखभाल का उत्तरदायित्व चिकित्सक तथा परामेडिकल आयाम को (paraprofessionals) पर होता है। इसीलिए इस प्रतिमान को अमिरसात्मक प्रतिमान कहा जाता है। (१) यहाँ रोगी के उपचार के लिए अऔषध (drugs), विद्युत आघात (electro-shock) तथा अन्य दैहिक चिकित्सा विधियों का उपयोग किया जाता है। इसमें मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक हस्तक्षेपों को उपयोग सामान्यतः नाहीं किया जाता है क्योंकि यह प्रतिमान इस विश्वास पर आधारित होता है कि व्यक्ति के गानसिक रूप से अध्यस्थ होने पर अथवा रोग ग्रस्त होने का समीत

जैविक है। इसलिए यहाँ दैहिक चिफित्मा द्वारा रोगी को रोग मुक्त करके मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने का प्रयास किया जाता है।

(2) Therapeutic model- इस प्रतिमान की निम्न बातें प्रमुख है- (क) यह प्रतिमान इस विश्वास पर आधारित है कि रोगी वास्तव में अशान्त एवं विशुवध (disturbed individual) होता है जिसका कोई जैविक कारक नहीं होता है बल्कि मनोवैज्ञानिक कारक होता है। (ख) इस प्रतिमान के अनुसार मानसिक रूप से षिक्षुष्ध व्यक्ति के उपचार की लिए दैहिक चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती है चल्कि मनोवैज्ञानिक चिकित्सा की आवश्यकता होती है। इसके लिए मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic therapy), व्यवहार चिकित्सा (behaviour therapy), आदि का उपयोग किया जाता है। (ग) इस प्रतिमान में चिकित्लाक का ध्यान रोगी अर्थात विक्षुब्ध व्यक्ति पर होता है उसके सामाजिक बातावरण पर नाहीं। (५) इस प्रतिमान में ठीका हस्तक्षेप (contract intervention) द्वारा रोगी का उपचार चिकित्सालग (hospital) निदान गृह (clinic) तथा निजी व्यवसाय (Private practice) में किया जाता है।

(**2)** समुदाय प्रतिमान **(Community model**):

समुदाय प्रतिमान एक ऐसा प्रतिमान है जिसमें उपचार का केन्द्र विक्षुब्ध व्यक्ति (distressed person) नहीं बल्कि उसका सामाजिक परिवेश होता है। यह प्रतिमान इस विश्वास पर आधिारित है कि व्यक्ति के मानसिक उपचार के लिए समुदाय के विभिन्न पक्षों में सुधार करना आवश्यक है। यह प्रतिमान मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन (Community mental health movement) का परिणाम है। इस प्रति मान का उद्देश्य जनसंख्या में समस्त सामाकि हालातों को देखते हुए मानसिक रोग की रोकथाम (prevention) एवं उपचार करना है ताकि मानसिक व्यास्थ्य का स्तर उन्नत बना रहे। इस प्रतिमान के भी दो प्रका है-

(1) नैदानिक ध्रुव प्रतिमान (Clinical pole model) इस प्रतिमान की निम्न विशेषतायें हैं-

(क) इस प्रतिमान में नैदानिक हस्तक्षेप का केन्द्र प्रधानतः चिकित्सीय प्रतिमान की तरह विक्षुब्ध व्यक्ति ही होता है यद्धपि हस्तक्षेप का अधिकांश संबंध सामाजिक संदर्भ (Social context) से होता है फिर भी चिकित्सा का फेन्द्र विन्दु रोगी (विक्षुब्ध व्यक्ति) हो होता है।

(ख) इस प्रतिमान में मानसिक व्याधि या मानसिक व्यथा (distrev) के निर्धारक के रूप में सामाजिक कारकों की भूमिका पर बल दिया जाता है। विश्वास किया जाता है कि समाज या समुदाय से सम्बध कारकों से ही व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ तथा विक्षुब्ध हो जाता है।

(ग) इस प्रतिमान में रोगी अर्थात मानसिक रूप से अस्वस्थ या विक्षुब्ध व्यक्ति के उपचार के लिए प्रायः उन्हीं हस्तक्षेप विधियों (intervention methods) का उपयोग किया जाता है, जिनका उपयोग चिकित्सीय प्रतिमान में किया जाता है। फिर भी यहाँ समुदाय विशेष की विशिष्ट आवश्यकताओं तथा जीवन-शैलियों (life styles) के अनुरूप उन विधियों को बनाने का प्रयास किया जाता है।

(घ) इस प्रतिमान में रोगी व्यक्ति का उपचार व्यावसायिक प्रतिवेशों (Protenional settings) जैसे अस्पताल, क्लिनिक आदि में नहीं किया जाता है बल्कि अधिक अध्याय सायिक प्रतिवेशों (Non-professional settings) जैसे परिवार, समुदाय आदि में किया जाता है।

(ङ) इस भहिल में विधुच्य व्यक्ति की वर्तमान समस्याओं तथा तात्कालिक सामाजिक व्यवहारों पर ही अधिक ध्यान दिया जाता है। उसके जीवन इतिहास, व्यक्तित्व संगतन, मुख्यों एवं मनोवृतियों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। चिकित्सा अधि अपेक्षाकृत छोटी होती है। हस्तक्षेप विधियों का प्रयोग अधिक से अधिक किया जाता है,

जिसमें कम से कम खर्च हो और संभाज के अधिक से अधिक लोगों विशेष कर गरीब तथा अलाभांवित लोगों (Disadvantaged persons) को अधिक से अधिक लाथ पहुंचाया जा सके।

(2) जन स्वास्थ्य प्रतिमान का यह एक प्रमुख प्रकार है। इस प्रतिमान को अनुसार पूरे समुदाय या समाज में ही कुछ इस तरह के कारक पाये जाते हैं जिनसे व्यक्ति में तनाव एवं चिन्ता बढ़ती है और उनके मानसिक स्वास्थ्य को कमजोर कर देती है। इस प्रतिमान की निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण हैं-

(क) इस प्रतिमान में नैदानिक हस्तक्षेप का केन्द्र व्यक्ति नहीं होता है वल्कि वह समाज या समुदाय होता है, जिसका वह व्यक्ति सदस्य होता है। यहाँ विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति अस्वस्थ नहीं होता बल्कि अस्वस्थ होता है, उसका समाज या समुदाय ।

(ख) इस प्रतिमान के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का वास्तविक आधार समुदाय है, व्यक्ति नहीं। सम्पूर्ण समुदाय या समाज में फैले तनाव (tension) आक्रमण (aggression) चिन्ता एवं संघर्ष से प्रमानित होकर व्यक्ति मानसिक व्यथा या मानसिक अस्वस्थता का शिकार बन जाता है।

(ग) इस प्रतिमान में समुदाय मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप (Community Psychological intervention) के द्वारा सामाजिक तंत्रों (Social system) जैसे परिवार विद्यालय, उद्धोज तथा सामाजिक परिस्थिति के प्रत्तिवलों (Strens) को दूर करके व्यक्ति को व्यथा को दूर करने का प्रयास किया जाता है। समुदाय मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप की व्यवस्था किसी भी सामाजिक संस्थान में हो सकती है, किन्तु विद्यालय को सबसे उत्तम संस्थान माना जाता है जिसमें विद्यालय के अधिकारी गण, शिक्षकगण तथा समुदाय के लोग मिलजुल कर मनौवैज्ञानिक हस्तक्षेप को सफल बनाने में सहयोग देते हैं।

(**3)** सामाजिक क्रिया प्रतिमान **(Social action model**):

यह प्रतिमान इस पूर्वकल्पना पर आधारित है कि सम्पूर्ण समाज न कि उस समाज का कोई व्यक्ति क्षुब्ध, या विमान होता है। इस प्रतिमान की निम्न विशेषताएँ है-

(क) इस प्रतिमान में अत्यधिक सामाजिक उन्मुखता (extreme social orientation) पायी जाती है। यहाँ रोगग्रस्त व्यक्ति नहीं होता वल्कि सम्पूर्ण समाज या समुदाय ही रोग ग्रस्त होता है।

(ख) इस प्रतिमान के अनुसार मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप (Psychological intervention) द्वारा व्यक्ति का उपचार नहीं वल्कि मूलतः समाज या समुदाय का उपचार किया जाता है। जबतक समाज या समुदाय को रोगमुक्त नहीं किया जाता तब तक व्यक्ति को रोगमुक्त नहीं किया जाता तवतक व्यक्ति को रोग मुक्त रखना संभव नहीं होगा। जातिगत पूर्वधारणा (Caste Prejudice) तथा साम्प्रदायिक पूर्वधारणा (communal Prejudice) के उन्माद से आज भारत में हर व्यक्ति पिड़ित है व्यक्ति वं इस मानसिक उनमाद का कारण उस व्यक्ति में नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज या समुदाय में निहित है। अत समाज या समुदाय में में

आवश्यक परिवर्तन लाकर लोगों की मनोवृत्तियों तथा उनके मुल्यों में परिवर्तन लाना होगा तभी व्यक्ति रोगमुक्त होकर स्थायी रूप से मानसिक स्तर पर स्वस्थ रह सकेगा।

(ग) इस प्रतिमान के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (Mental health programme) के उद्देश्य को मुख्य सामाजिक कार्यक्रमों में आवश्यक परिवर्तन लाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। इसके अनुसार हस्तक्षेप का लक्ष्य वस्तु (target object) व्यक्ति की अपेक्षा सामाजिक एवं राजनैतिक नीति का निर्माता होना चाहिए।